Dr. Sangita Kumari Saha
B.A D-II (H) IV paper.

Functionalism

Edward B. Titchener के संरचनावाद से प्रेरित होकर शिकागो में एक नवीन सम्प्रदाय की दिशा में कार्य प्रारम्भ हुआ जिसे प्रकार्यवाद के नाम से अभिहित किया जाता है। इस सम्प्रदाय को विकसित करने में कई मनोवैज्ञानिकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मनोविज्ञान के इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत विभिन्न मानसिक क्रियाओं के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन के आधार पर बुद्धि, व्यक्तिगत विभिन्नता, अभिप्रेरणा आदि से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आये हैं। संरचनावाद के उपरान्त प्रकार्यवाद का उद्भव मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में आंका गया। इसे एक नवीन एवं उपयोगी सम्प्रदाय के रूप में स्वीकार किया जाता है। अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में इस सम्प्रदाय पर प्रारम्भिक शोध कार्य हुए और 1898 में इस सम्प्रदाय को एक सुनिश्चित स्वरूप प्रदान कर दिया गया। इसका श्रेय (आँन) John Dewey and James Rowland Angell को दिया जाता है। John Dewey शिकागो विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत थे। और James Rowland को शिकागो विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया था। James Rowland John Dewey की अपेक्षा आयु में काफी छोटे थे परन्तु दोनों एक दूसरे से प्रभावित थे। दोनों ही अपने-अपने क्षेत्रों में योग्य एवं ख्याति प्राप्त विद्वानों के रूप में जाने जाते थे। यह दोनों का सौभाग्य था कि दोनों ही एक विश्वविद्यालय में कार्यरत थे। Dewey and Angell ने सम्मिलित रूप से प्रकार्यवाद पर शोध एवं अध्ययन किया तथा अन्य समय में ही प्रकार्यवाद को एक निश्चित स्वरूप देने में सफल हुए।

यह उल्लेखनीय है कि प्रकार्यवाद एक मनोवैज्ञानिक प्रत्यय है परन्तु इसकी आत्मा एक दार्शनिक पृष्ठभूमि है। इस दार्शनिक आधार को प्रयोजनवाद के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इससे यह स्पष्ट है कि John Dewey के दार्शनिक विचारों और Angell के मनोवैज्ञानिक विचारों का सम्मिलन ही प्रकार्यवाद को जन्म दे सका। अतः दोनों ही विद्वानों को सम्मान रूप से प्रकार्यवाद के जनक के रूप में माना जाता है।

Scanned with CamScanner